2

सन्धि-ज्ञान

(हल् संधि, विसर्ग संधि)

विद्या + आलय = विद्यालय। इति + आदि = इत्यादि। जगत् + ईश = जगदीश। इन शब्दों को यदि शीघ्रता से पढ़ा जाय तो पृथक्-पृथक् उच्चारण नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में उनका मिल-जुलकर नया उच्चारण होता है। इस नये उच्चारण में जो परिवर्तित ध्वनि बन जाती है, उसे सन्धि के द्वारा बना हुआ मानते हैं। इस प्रकार 'सन्धि' शब्द का अर्थ है–जोड़ अथवा मेल। सन्धि शब्दों के मिले हुए उच्चारण का एक रूप है, अत: दो शब्दों के मिलने से जो वर्ण सम्बन्धी परिवर्तन होता है, उसे सन्धि कहते हैं।

सन्धि के भेद–सन्धि के तीन भेद हैं–

1. स्वर सन्धि (अच् सन्धि)–जब पहले शब्द का अन्तिम स्वर दूसरे शब्द के आदि स्वर से मिलता है, तो इसे स्वर सन्धि कहते हैं। जैसे–

देव + आलय: = देवालय: = अ + आ = आ।

2. व्यञ्जन सन्धि (हल् सन्धि)–जब पहले शब्द का अन्तिम व्यञ्जन दूसरे शब्द के आदि व्यञ्जन या स्वर से मिलता है, तो इसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। जैसे–दिक् + गज = दिग्गज (क् + ग = ग्ग)

3. विसर्ग सन्धि–जब व्यञ्जन का विसर्ग में या विसर्ग का व्यंजन में परिवर्तन होता है, तो विसर्ग सन्धि कहते हैं। जैसे–प्राय: + चित = प्रायश्चित्।

व्यञ्जन (हल्) सन्धि

व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन आने पर व्यञ्जन सन्धि होती है।

जैसे– सत् + चित = सच्चित्, जगत् + ईश्वर: = जगदीश्वर:। यहाँ पहले उदाहरण में 'त' के बाद व्यञ्जन और दूसरे उदाहरण में व्यञ्जन के बाद स्वर आया है।

व्यञ्जन सन्धि के भेद

1. श्चुत्व सन्धि,
2. ष्टुत्व सन्धि,
3. जश्त्व सन्धि,
4. चर्त्व सन्धि,
5. अनुस्वार सन्धि,
6. परसवर्ण सन्धि।

अनुस्वार सन्धि

सूत्र– "मोऽनुस्वार:"

जब पदान्त में 'म्' के बाद कोई भी व्यञ्जन वर्ण आता है, तो 'म्' के स्थान पर अनुस्वार (ं) हो जाता है।

जैसे– हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे
त्वम् + करोषि = त्वं करोषि
अहम् + गच्छामि = अहं गच्छामि
रामम् + वन्दे = रामं वन्दे **(2020MO, MQ, MS)**

विशेष– पदान्त में 'म्' के बाद स्वर आने पर 'म्' का अनुस्वार नहीं होता, वरन् वह आने वाले स्वर के साथ मिल जाता है।

जैसे– रामम् + अगच्छत् = राममगच्छत्। **(2020MP)**
जलम् + आनय = जलमानय।

अभ्यास-1

1. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–**
कथं त्वमत्र, किमत्र त्वया क्रियते, गुरूणाहमुक्त:।

2. निम्नलिखित में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–

कथम् + अत्र, त्वम् + चलसि, नगरं + गतः, मातरम् + वन्दे, रामं वन्दे, गृहम् + गतः, रामम् + भजामि।

3. ''मोऽनुस्वारः'' सूत्र की व्याख्या कीजिए।

परसवर्ण सन्धि

सूत्र– ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''

यदि किसी पद के मध्य में स्थित अनुस्वार के बाद यय् (प्रत्याहार का वर्ण) आये तो अनुस्वार के स्थान पर सदैव उस वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है।

जैसे– शां + तः = शान्तः **(2020MS, MT)**

अं + कितः = अङ्कितः

सं + ति = सन्ति

अं + चितः = अञ्चितः

गं + ता = गन्ता

गुं + फितः = गुम्फितः

कुं + ठितः = कुण्ठितः

कुं + चित् = कुञ्चित्।

विसर्ग सन्धि

विसर्ग के साथ किसी स्वर या व्यञ्जन के मिलने से जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

जैसे– हरिः + चलति = हरिश्चलति **(2020MS)**

रामः + चलति = रामश्चलति

शिशुः + अपतत् = शिशुरपतत्

1. विसर्जनीयस्य सः

यदि विसर्ग के पश्चात् क् ख् च् छ् ट् ठ् त् थ् प् फ् या श् ष् स् में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जायेगा।

जैसे– मुनिः + तपति = मुनिस्तपति **(2020MQ)**

यशः + तनोति = यशस्तनोति

नमः + ते = नमस्ते **(2020MP, MT)**

छात्रः + चलति = छात्रश्चलति।

जब श्चुत्व और ष्टुत्व सन्धियों का योग हो जाता है तो सन्धि निम्न चार खण्डों में बँट जाती है—

1. त् थ् स् के साथ स् ही रहता है।
2. ट् ठ् ष् के साथ ष् हो जाता है।
3. च् छ् श् के साथ श् हो जाता है।
4. क् ख् प् फ् के बाद में रहने से विसर्ग ही रहता है।

जैसे– मोहनः + चलति = मोहनश्चलति।

हरिः + खादति = हरिः खादति।

छात्रः + तिष्ठति = छात्रस्तिष्ठति।

वृक्षः + फलति = वृक्षः फलति।

गौः + चरति = गौश्चरति। **(2020MO)**

अभ्यास-2

1. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए—**
नद्यास्तटे, बालकाश्च, निश्छलम्, पुंगवश्च, हरिश्चिनोति, पुरस्कार:, देवैश्छलिता:, मनस्ताप:।
2. **निम्नलिखित में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए—**
धनु: + टंकार, पुन: + च, भानु: + तरति, तरु: + फलति, क: + करिष्यति।
3. **"विसर्जनीयस्य स:" सूत्र की व्याख्या कीजिए।**

2. ससजुषो रुः

नियम 1—यदि पद के अन्त में स् या सजुष् हो तो स् के स्थान पर रु हो जाता है। इस रु का उ हट जाता है, केवल र् रह जाता है।

नियम 2—यदि विसर्ग से पहले अ, आ के अतिरिक्त कोई भी स्वर हो तथा उसके पश्चात् कोई स्वर अथवा मृदु व्यञ्जन (वर्गों का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण **या** य व र ल ह) में से कोई हो, तो विसर्ग के स्थान पर 'रु' होता है और 'रु' के 'उ' का लोप होकर 'र्' रह जाता है।

जैसे— निस् + दय: = निर्दय: **(2020MP)**
निस् + आश्रित: = निराश्रित:
शिशु: + अपतत् = शिशुरपतत्
कवि + आगत: = कविरागत:
गुरु: + जयति = गुरुर्जयति
भानु: + उदेति = भानुरुदेति
रात्रि: + गच्छति = रात्रिर्गच्छति

अभ्यास-3

1. **निम्नलिखित में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए—**
हरि: + जयति, साधो: + भूषणम्, देव: + अपि, कवे: + कृति:, मुनिस् + आगच्छति, भानु: + उदेति, हरे: + प्रगति:, पितुस् + आज्ञा, भानोस् + अयम्।
2. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए—**
गौरयम्, मुनिरुवाच, निर्दय:, दुर्लभ:, प्रातरहम्, निराश्रित:, हरेरिदम्, देवैरपि, प्रादुर्भाव:, कविर्जयति, पाशैर्बद्ध:, आविर्भाव:, ऋषिर्वदति, हरिरागच्छति, कविर्गच्छति।

3. अतोरोरप्लुतादप्लुते

यदि विसर्ग के पूर्व और पश्चात् 'अ' हो तो पश्चात् के अ सहित विसर्ग के स्थान पर 'ओ' हो जाता है।

जैसे— बाल: + अवदत् = बालोऽवदत्
राम: + अपि = रामोऽपि
शुक: + अस्ति = शुकोऽस्ति **(2020MQ)**
क: + अपि = कोऽपि
हरे + अव = हरेऽव

अभ्यास-4

1. **निम्नलिखित में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए—**
देवस् + अपि, शिव: + अर्च्य:, सस् + अपि, नाम: + अपि, शुक: + अस्ति, स: + अपि।

2. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–**
शिवोऽत्र, सोऽहम्, देवोऽर्च्यः, रामोऽहम्, बालोऽवदत्, नृपोऽहम्, बालकोऽयम्।

3. **'अतोरोरप्लुतादप्लुते सूत्र' की व्याख्या कीजिए।**

4. हशि च

यदि विसर्ग से पहले 'अ' तथा विसर्ग के पश्चात् कोई मृदु व्यञ्जन (वर्गों के तीसरे, चौथे, पाँचवे वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह) में से कोई वर्ण होता है तो विसर्ग के स्थान पर उ के द्वारा 'ओ' हो जाता है।

जैसे– मेघः (मेघस्) + गर्जति = मेघ + उ + गर्जति = मेघो गर्जति। **(2020MQ)**
रामः (रामस्) + नमति = राम + उ + नमति = रामो नमति।
मृगः (मृगस्) + धावति = मृग + उ + धावति = मृगो धावति।
शिवः (शिवस्) + वन्द्यः = शिव + उ + वन्द्यः = शिवो वन्द्यः।
रामः (रामस्) + हसति = राम + उ + हसति = रामो हसति।

अभ्यास-5

1. **निम्नलिखित में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–**
मयूरः + नृत्यति, जनः + वदति, बालः + हसति, पुत्रः + गच्छति, मनः + रथः, शिवः + वन्द्यः।

2. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–**
मनोरमः, यशोधनः, दिनेशो गच्छति, रामो पठति, मनोयोगः।

अभ्यास प्रश्न

(क) 1. सन्धि किसे कहते हैं?

2. **निम्नलिखित में से किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए–**
सदैव, गङ्गोदकम्, हरिश्शेते।

3. **किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए–**
वागीशः, अत्यल्पः, पशुश्चलति।

4. **निम्न शब्दों में दीर्घ एवं गुण सन्धि के शब्दों को अलग कीजिए तथा उनका सन्धि-विच्छेद कीजिए–**
सुरेशः, राजेन्द्रः, रामावतार, महोत्सवः, विद्याभ्यास, नदीशः, पितृणम्, वधूत्सवः, विद्यार्थी।

5. **निम्नांकित में से किसी एक शब्द का सन्धि-विच्छेद करके सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–**
लघूर्मिः, इत्यादि, सच्चरित्रम्।

6. **निम्नांकित में से किसी एक शब्द का सन्धि-विच्छेद करके सन्धि का नाम लिखिए–**
साधूक्तम्, राजोवाच, बालकोऽयम्।

7. **निम्नलिखित में से किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–**
लाकृति, ब्रह्मर्षि, सच्चित्।

8. **किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए–**
चमूर्जितम्, शयनम्, तपश्चर्या।

9. **निम्नलिखित में से किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए–**
(अ) यद्यपि, नयनम्, तच्चितम्।

(ब) नदीशः, मुनिनोक्तम्, सदानन्दः।
(स) सुरेशः, सदैव, सच्चित्।
(द) देवैश्वर्यम्, जगदीश्वरः, रामश्चिनोति।
(य) वृकोदरः, नायकः, अन्यच्च।
(र) इतीव, इत्येव, इहैव।
(ल) गुर्वादिशः, वनौषधिः, गिरीशः।
(व) यथोचितम्, विद्यालयः, पावकः, हरिंवन्दे।
(श) मातृणम्, सुबन्तम्, मुनिस्तपति।
(ष) शिवालय, सदैव, उपेन्द्र।
(स) चयनम्, सदैव, नमश्चकार।
(ह) तत्रायम्, चन्द्रोदयः, अन्वेषणम्।
(क्ष) विद्यार्थी, महेन्द्रः, पवनः।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के चार विकल्प दिये गये हैं। सही विकल्प चुनकर लिखिए–

1. **'दिगम्बरः' का सन्धि-विच्छेद है–**
(अ) दिक् + अम्बरः (ब) दिग + अम्बरः (स) दिक + अम्बरः (द) दिग् + अम्बरः,

2. **'चयनम्' शब्द का सन्धि-विच्छेद क्या होगा?**
(अ) च + अनम् (ब) चय + नम् (स) चे + अनम् (द) चे + एनम्

3. **'गङ्गा + उदकम्' की सन्धि होती है–**
(अ) गङ्गुदकम् (ब) गङ्गूदकम् (स) गङ्गोदकम् (द) गङ्गौदकम्

4. **'ओ' के बाद कोई स्वर आने पर 'ओ' का होगा–**
(अ) अय् (ब) अव् (स) आव् (द) आय्

5. **सकार का शकार से योग होने पर क्या बनेगा?**
(अ) सकार का रकार हो जाता है। (ब) सकार का शकार हो जाता है।
(स) सकार का सकार हो जाता है। (द) सकार का विसर्ग हो जाता है।

6. **अकार और आकार का योग होने पर होता है–**
अ, आ, औ।

7. **ऋ के बाद ऋ होने पर हो जाता है–**
ऋ, ॠ, रा, र।

8. **'स्वागतम्' में सन्धि है–** **(2019AO)**
(अ) दीर्घ (ब) यण् (स) गुण (द) वृद्धि

9. **लो + अणः में सन्धि है–**
(अ) गुण (ब) अयादि (स) यण् (द) दीर्घ

10. **'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र है–**
(अ) गुण सन्धि का (ब) दीर्घ सन्धि का (स) यण् सन्धि का (द) वृद्धि सन्धि का

11. **'गवेषणा' में सन्धि है–**
(अ) गुण (ब) यण् (स) अयादि (द) पररूप

12. **अच् + अन्तः होने पर क्या बनेगा?**
(अ) अझन्तः (ब) अजःअन्तः (स) अगन्तः (द) अजन्तः

13. महेशः में सन्धि है–
(अ) दीर्घ (ब) गुण (स) अयादि (द) पूर्वरूप

14. 'इकोयणचि' सूत्र है–
(अ) गुण सन्धि का (ब) यण् सन्धि का (स) वृद्धि सन्धि का (द) दीर्घ सन्धि का

15. उ के बाद आ आने पर हो जाता है–
(अ) वा (ब) व (स) वु (द) वे

16. 'अविनाशः' में सन्धि है–
(अ) दीर्घ (ब) गुण (स) वृद्धि (द) यण्

17. जलौधः में सन्धि है–
(अ) दीर्घ (ब) गुण (स) वृद्धि (द) यण्

19. गुरु + उपदेशः की सन्धि होगी–
(अ) गुरोपदेशः (ब) गुरु उपदेशः (स) गुरूपदेशः (द) गुरेपदेशः

20. 'सुध्युपास्यः' में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) यण् (स) वृद्धि (द) पूर्वरूप

21. काव्योत्कर्ष में सन्धि है–
(अ) दीर्घ (ब) गुण (स) यण् (द) अयादि

22. अ के बाद ए आने पर होता है–
(अ) ओ (ब) ऐ (स) औ (द) ए

23. 'एचोऽयवायावः' सूत्र है–
(अ) यण् सन्धि का (ब) गुण सन्धि का (स) अयादि सन्धि का (द) जश्त्व सन्धि का

24. परमौषधि में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) वृद्धि (स) यण् (द) दीर्घ

25. मतैक्यम् में सन्धि है–
(अ) दीर्घ (ब) वृद्धि (स) यण् (द) अयादि

26. जल + उपरि की सन्धि होगी–
(अ) जलोपरि (ब) जलूपरि (स) जलुपरि (द) जल्वूपरि

27. 'महर्षि' में सन्धि है–
(अ) यण् सन्धि (ब) वृद्धि सन्धि (स) गुण सन्धि

28. मध्वरिः में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) वृद्धि (स) यण् (द) अयादि

29. प्रत्युत्तर में सन्धि है–
(अ) यण् (ब) गुण (स) वृद्धि (द) अयादि

30. हरेऽव में सन्धि है–
(अ) पूर्वरूप (ब) पररूप (स) गुण (द) वृद्धि सन्धि

31. 'सच्चित्' में सन्धि है–
(अ) जश्त्व सन्धि (ब) अनुस्वार सन्धि (स) ष्टुत्व सन्धि (द) श्चुत्व सन्धि

32. 'गङ्गौधः में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) वृद्धि (स) यण् (द) अयादि

33. 'जीवनोद्देश्यः' में सन्धि है–
(अ) दीर्घ (ब) गुण (स) यण् (द) पूर्वरूप

34. 'देवालयः' में सन्धि है–
(अ) दीर्घ (ब) यण् (स) गुण (द) वृद्धि

35. **'भाग्योदय' में सन्धि है–**
(अ) दीर्घ (ब) वृद्धि (स) गुण (द) विसर्ग
36. **'प्रत्युपकार:' में सन्धि है–**
(अ) दीर्घ (ब) गुण (स) यण् (द) अयादि
37. **'सदगति:' में सन्धि है–**
(अ) गुण (ब) झलां जशोऽन्ते (स) झलां जश्झशि (द) स्तोश्चुनाश्चु:
38. **निम्नलिखित में से किसी एक का सन्धि-विच्छेद कर सन्धि का नाम लिखिए–**
(अ) सच्चित् (ब) महर्षि (स) वागीश:
39. **भवनम् का सही विकल्प चुनकर लिखिए–**
(अ) दीर्घ (ब) अनुस्वार (स) ष्टुत्व (द) अयादि
40. **'मट्टीका' में सन्धि है–**
(अ) ष्टुत्व (ब) श्चुत्व (स) जश्त्व (द) अनुस्वार
41. **सन्धि-विच्छेद कीजिए एवं सन्धि का नाम बताइए–**
(अ) पञ्चैते (ब) पवित्रम् (स) शिवोऽहम् (द) सज्जन:
42. **सन्धि-विच्छेद कीजिए एवं सन्धि का नाम बताइए–**
(अ) विद्योन्नति (ब) उच्चारणम् (स) रामोवदति
43. **'एकेनैव' में सन्धि है–**
(अ) गुण सन्धि (ब) वृद्धि सन्धि (स) यण् सन्धि (द) अयादि सन्धि
44. **'वनौषधि:' में सन्धि है–**
(अ) गुण (ब) यण् (स) वृद्धि (द) अयादि
45. **'एकैकम्' में सन्धि है–**
(अ) दीर्घ (ब) वृद्धि (स) गुण (द) अयादि
46. **'महेश:' में सन्धि है–**
(अ) अदेङ्गुण: (ब) इकोयणचि (स) वृद्धिरेचि
47. **'अजन्त' में सन्धि है–**
(अ) गुण सन्धि (ब) विसर्ग सन्धि (स) जश्त्व (द) यण्
48. **'मतैक्यम्' में सन्धि सूत्र है–**
(अ) इकोयणचि (ब) वृद्धिरेचि (स) अदेङ्ग गुण:
49. **'महेश:' में सन्धि है–**
(अ) दीर्घ सन्धि (ब) गुण सन्धि (स) अयादि सन्धि (द) पूर्वरूप सन्धि
50. **'गणेश:' में सन्धि है–**
(अ) यण (ब) गुण (स) दीर्घ (द) वृद्धि
51. **'तच्छवि:' में सन्धि है–**
(अ) दीर्घ (ब) जश्त्व (स) श्चुत्त्व (द) चर्त्व
52. **'नयनम्' में सन्धि है–**
(अ) दीर्घ (ब) अनुस्वार (स) ष्टुत्व (द) अयादि
53. **'चन्द्रोदय:' में सन्धि है–**
(अ) दीर्घ (ब) जशत्व (स) विसर्ग (द) गुण

●